भारतीय संगीत में शोध के क्षेत्र एवं सम्भावनाएं

डॉ.टेकचन्द कौल
रीसर्च ऐसोसिएट, संगीत विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

ABSTRACT

The discovery of new directions is the innate tendency of humans. Because of this, new inventions have continued and will continue to exist. Humans always advance towards new discoveries; as a result human can touch the moon, float in the air etc. Like the human has progressed in all the field of life, he will continue research in the field of music also. The cultural tradition of the country is prosperous and alternate with the abundance of research in the Indian music sector. The need for research in the field of Indian music also remains that the old-fashioned theories should be revived, underlining the change in time, and to highlight some of the fundamental manifestations. In the paper presented, an attempt has been made to discuss the broad areas of research in Indian music, from which the upcoming music researchers can show the way for research in music.

Key words : Music Research, New areas of research, Indian Music.

भूमिका

यद्यपि संगीत एक ललित कला है, तथापि इसके दोनों पक्षों (सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक) में शोध कार्य की प्रबल सम्भावनाएं हैं। शोध कर्ता को सर्वप्रथम संगीत के दोनों पक्षों में से किसी एक पक्ष में शोध कार्य करने के लिए चयन करना पड़ता है और यह चयन उसकी रूचि के अनुरूप होता है अर्थात् यदि शोधकर्ता की रूचि संगीत के क्रियात्मक पक्ष में है तो वह अपने लिए ऐसे विषय का चयन करेगा जो कि क्रियात्मक पक्ष से सम्बन्धित हो, तथा इसके विपरीत जिसकी रूचि शास्त्रीय पक्ष में होगी तो वह उसी के अनुसार विषय का चुनाव करेगा। इसके अतिरिक्त संगीत का शिक्षण पक्ष भी महत्वपूर्ण है। अतः इसके क्षेत्र के शोध कार्य स्वतन्त्र रूप से किए जाने की प्रबल सम्भावना को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। इसी संदर्भ में डॉ. प्रेमलता शर्मा का विचार दृष्टव्य है– ''संगीत में अनुसंधान की आवष्यकता पर कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाना है। फिर भी इस प्रसंग में आज की परिस्थिति पर दृष्टिपात उपयोगी होगा, क्योंकि उससे अनुसंधान की उत्कट आवश्यकता का कुछ भान हो सकेगा'। संक्षेप में इस परिस्थिति के चार पहलू हैं– 1. प्रयोगात्मक 2. शास्त्र पक्ष 3. इतिहास पक्ष 4. शिक्षण पक्ष।

सांगीतिक अनुसंधान के सभी क्षेत्र भी इस सामान्य वर्गीकरण के अन्तर्गत आ जाते हैं। प्रायोगिक कला होने के कारण इसमें कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जिसके लिए विशिष्ट प्रक्रिया एवं प्रविधि की आवश्यकता है। संगीत में शोध की दिशाओं का निम्नलिखित प्रकार से आंकलन किया जा सकता हैः–

संगीत में ऐतिहासिक शोध

संगीत में ऐतिहासिक अनुसंधान का लक्ष्य अतीत में संगीत की परिस्थितियों, मान्यताओं, पद्धतियों एवं क्रमिक विकास का पता लगाना है। ऐतिहासिक अनुसंधान मानव की अपने पूर्वजों के विषय में जानने की स्वाभाविक इच्छा से प्रेरित होता है। कुछ लोगों का मत है कि यह खोज केवल एक मानवीय लालसा की ही तृप्ति नहीं करती, वरन् इससे कुछ वास्तविक लाभ भी होता है। अतीत का

अध्ययन हमें वर्तमान परिस्थितियों को समझनें में सहायक होता है। इतिहास के अध्ययन से चाहे वह किसी भी काल का क्यों न हो, अपने पूर्वजों की कृतियों पर गर्व होता है।

संगीत शास्त्र

भारतीय संगीत शास्त्र में गीत और वाद्य के साथ–साथ नृत्य पर भी विचार होता है। भारतीय संगीत का आधार अत्यन्त वैज्ञानिक पद्धति है। अनुसंधान की यह वैज्ञानिक पद्धति अत्यन्त स्थूल है। इस रूप में भारतीय संगीत शास्त्र का निर्माण हुआ है। यद्यपि इसमें संदेह नहीं कि हमारे संगीत सिद्धान्त आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति द्वारा भी सिद्ध किए जा सकते हैं। भारतीय संगीत पद्धति अत्यन्त सुक्ष्म है, जो दर्शन और योग पर आधारित है। संगीत शास्त्र आधुनिक स्थूल वैज्ञानिक उपकरणों पर आधारित है। अतः इस क्षेत्र में अनुसंधान अत्यन्त वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर होता है।

दार्शनिक शोध

दर्शन जीवन के मूल्यों तथा लक्ष्यों को निर्धारित करता है। किसी भी ज्ञान की प्राप्ति का उद्देश्य इन्हीं मूल्यों तथा लक्ष्यों की प्राप्ति होता है। संगीत में यह क्षमता सर्वाधिक है इसलिए संगीत सब कलाओं का आदर्श है। दर्शन के सिद्धान्तों की आधारभूत समस्याओं तथा संगीत के दार्शनिक पहलुओं और जीवन के साथ उनके सामंजस्य पर अनुसंधान सांगीतिक अनुसंधान के क्षेत्र में अत्यन्त उपयोगी विषय तथा क्षेत्र है।

समाज विज्ञान सम्बन्धी शोध

मनुष्य के सामाजिक जीवन के हर पहलू का संगीत से अटूट सम्बन्ध है। संगीत के सामाजिक अध्ययन का सच्चा स्वरूप यह है कि किसी विशेष प्रकार की व्यवस्था से युक्त समाज में संगीत की क्या स्थिति रही और समाज में परिवर्तन के साथ संगीत में क्या परिवर्तन हुए। भारतीय संगीत शास्त्र में इस तरह के अध्ययन बहुत कम हुए हैं। समाज में संगीत के स्थान के बारे में कई उल्लेख मिलते हैं किन्तु संगीत के सामाजिक अध्ययन का सीधा प्रयास न होकर फुटकर उल्लेखों में मिलता है इसलिए आज के समाज में संगीत के विकास के लिए तथा समाज में संगीत के उपयुक्त स्थान के लिए इस प्रकार के शोध आधारशिला सिद्ध हो सकते हैं।

सौन्दर्य शास्त्र

सौन्दर्यशास्त्र एक अत्यन्त विकसित श्शास्त्र है पिछले 150 वर्षों से पाश्चात्य देशों में सौन्दर्यशास्त्र का संगीत शास्त्र के रूप में अध्ययन होता चला आ रहा है। भारतीय परम्परा में सौन्दर्यशास्त्र के अन्तर्गत दार्शनिकता का पुट अधिक है। भारतीय दर्शनशास्त्र में किसी भी सता के तीन तत्व माने गए हैं, सत्, चित् और आनन्द। अतः सौन्दर्य का समावेश आनन्द के अन्तर्गत माना जाता है। आनन्द का नाम ही रस है। कलाओं से प्राप्त होने वाले आनन्द के लिए रस का प्रयोग किया गया अतः संगीत के सौन्दर्य बोध के क्षेत्र में अनुसंधान के व्यापक क्षेत्र हैं।

मनोवैज्ञानिक शोध

संगीत का प्रभाव मानसिक विकास में सभी क्षेत्रों पर होता है। इस विषय के अध्ययन से अनुसंधान के नए क्षेत्र निर्धारित किए जा सकते है साथ ही संगीत द्वारा मानसिक विकास, बौद्धिक विकास एवं व्यक्तिगत विकास जैसे क्षेत्रों में भी अध्ययन किया जा सकता है। मनोवज्ञिान के अर्न्तगत मन की

प्रकिया या व्यवहार का अध्ययन किया जाता है और संगीत का तो मन से घनिष्ट सम्बन्ध है, अतः मनोविज्ञान का संगीत से सम्बन्ध जोड़कर उनका अध्ययन एक अत्यन्त रोचक विषय है।

दैहिक विज्ञान

मन और शरीर के दो अंग–श्रवण यंन्त्र और ध्वनि यंन्त्र। इनका अध्ययन संगीत की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण और आवयक है। कंठ में ध्वनि की उत्पति कैसे होती है और कान द्वारा ग्रहण किस प्रकार होती है इस पर विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता है। ध्वनियों का विशेषता, सांगीतिक ध्वनियों का मन पर क्या प्रभाव पड़ता है यह एक अत्यन्त उपयोगी क्षेत्र है। भारत के दर्शनशास्त्र के अन्तर्गत कान का अध्ययन किया गया लेकिन अध्ययन की पद्धति में भेद होने के कारण इस अध्ययन में भिन्नता है। अतः वर्णों की उत्पति स्थान, उच्चार, स्वर व्यंजनों का क्रम इसका अध्ययन स्वर रचना की दृष्टि से किया जाए तो वह संगीत के क्षेत्र में एक उपलब्धि होगी।

लोक तात्विक शोध

किसी देश की सभ्यता एवं संस्कृति का परिचय उस देश के लोक–साहित्य से पर्याप्त मात्रा में मिल सकता है। लोक साहित्य के विशिष्ट अंग लोक गीत, लोक नृत्य, लोक वाद्य, लोक नाट्य संगीत की दृष्टि से अध्ययन के अत्यन्त समृद्ध क्षेत्र हैं। लोक साहित्य का संगीत की दृष्टि से अध्ययन, लोकगीतों की धुनों का सांगीतिक विश्लेषण, लय, ताल, छंद आदि तत्वों का विवेचन लोक साहित्य के परिरक्षण, परिवर्धन एवं संरक्षण के लिए लोकतात्विक शोध के अत्यन्त महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं।

संगीत शिक्षण

''संगीत को शिक्षा के पाठ्यक्रम में अभी कुछ ही वर्षों से शामिल किया गया है। इससे पहले संगीत शिक्षा केवल गुरूओं द्वारा ही प्राप्त होती थी परन्तु आधुनिक काल में पं दिगम्बर पुलुस्कर एवं पं भातखण्डे जी के अथक प्रयत्नों से आज संगीत अधिकांश स्कूल व कालेजों में विषय में पढ़ाया जाता है। पाठ्यक्रम में संगीत एक नया विषय होने के कारण अभी संगीत के क्षेत्र में बहुत अनुसंधान की आवश्यकता है।

निष्कर्श

आधुनिक काल में संगीत जहां शिक्षा का एक आवष्यक अंग बनता जा रहा है वहीं इस क्षेत्र में अनुसंधान की अत्यन्त आवश्यकता है जिससे इसे नई दिशा मिल सके। संगीत केवल मनोरंजन का ही साधन बन कर न रह जाए, या केवल कुछ लोगों तक ही सीमित न रहकर जनसाधारण का विषय बन सके और शिक्षण का एक अभिन्न अंग बनकर विद्यार्थी के चरित्र–निर्माण व उसके सर्वतोन्मुखी विकास के लिए सहायक हो।

संदर्भ

डॉ0 मनोरमा शर्मा, संगीत एवं शोध प्रविधि, हरियाणा साहित्य अकादमी चण्डीगढ़, 1990
डॉ वन्दना शर्मा, भारतीय संगीत में अनुसंधान की समस्याएं, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004
नगेन्द्र, शोध और सिद्धान्त, नेशनल पब्लिशिंग दिल्ली, 1961
वासुदेव शास्त्री, संगीत शास्त्र, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, 1958
हरद्वारी लाल शर्मा, सौन्दर्य शास्त्र, आदर्श बुक डिपो, नई दिल्ली,1953
बी0 एम0 जैन, रिसर्च मेथेडोलोजी, सांईटिफिक पब्लिशर्स, जोधपुर, 1989
अलका नागपाल, भारतीय संगीत में शोध–प्रविधि, राधा पब्लिकेशन्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्ज़, दिल्ली 1996